प्रातः क्लास ओमशांति 20.7.66

रिकार्ड– इस पाप की दुनियॉ से.....ओमशांति। मीठे2 रुहानी बच्चों ने गीत सुना। किसने सुना?आत्माओं ने। आत्मा को परमात्मा नहीं कहा जाता। एक चीज़ को दो अक्षर नहीं दिया जा सकता। मनुष्य को भगवान नहीं कह सकते। अच्छा अभी तुम हो ब्राह्मण। तुमको अभी देवता बनना है। ब्राह्मण को देवता नहीं कहा जा सकता। ब्रह्मा को भी देवता नहीं कहा जो सकता। भल कहते हैं ब्रह्मा देवता नमः। विष्णु देवता नमः.....। परंतु ब्रह्मा और विष्णु में तो बहुत फर्क है। विष्णु को देवता कहा जाता। ब्रह्मा को देवता नहीं कह सकते ; क्योंकि वो है ब्राह्मणों का बाप। ब्राह्मणों को देवता नहीं कहा जाता। शंकर को ना ब्रह्मा को देवता कहा जा सकता।। वो तो देवता बनता है। दैवी धर्मवाला तो विष्णु बनता है ना कि शंकर। अब यह बातें कोई मनुष्य , मनुष्य को नही समझा सकते। भगवान ही समझाते हैं। मनुष्य तो अन्धश्रद्धा में जो आता सो बोल देते। अब तुम बच्चे समझते हो रुहानी बाप हम बच्चों को पढ़ा रहे हैं। अपन को आत्मा समझना है। हम आत्मा यह शरीर लेते हैं। हम आत्मा ने 84 जन्म लिये हैं। जैसा2 कर्म करते हैं वैसा शरीर मिलता है। शरीर से आत्मा अलग हो जाती है तो फिर शरीर से प्यार नहीं रहता । आत्मा से प्यार रहता है। आत्मा से भी प्यार तब है जब आत्मा शरीर में है। पितरों को मनुष्य बुलाते हैं। शरीर तो उनका खतम हो गया। फिर उनकी आत्मा को याद करते हैं। इसलिए ब्राह्मण बुलाते हैं। कहते हैं फलाने की आत्मा आवो।यह भोजन आकर खाओ। गोया आत्मा में मोह रहता है ; परंतु पहले शरीर से मोह था तो वो शरीर याद आता था। ऐसे नहीं समझते कि हम आत्मा को बुलाते हैं। आत्मा ही सब कुछ करती है। आत्मा में अच्छे वा बुरे संस्कार रहते हैं। पहले2 है देह अभिमान। फिर उनके बाद और विकार आते हैं। सबको मिलाकर कहा जाता है विकारी। जिसमें यह नहीं है उनको कहा जाता है निरविकारी। यह तो समझते हो बरोबर भारत में जब यह देवी देवतायें थे तो उनमें दैवी गुण थे। .....। यह भी कहा जाता है राजा–रानी , प्रजा सब देवी देवता धर्म के हैं। यह बहुत उॅच सुख देने वाला है। बच्चों ने भी गीत सुना। यह आत्मा ने कहा कि बाबा ऐसी जगह ले चलो जहॉ मुझे चैन शांति हो। वो तो है सुखधाम और शांतिधाम। यहॉ बड़ी बेचैनी है। सतयुग में भी बैचेनी होती नहीं। आत्मा समझती है बाबा बिगर कोई चैन की दुनियॉ में नहीं ले जा सकता। बाप कहते हैं मुक्ति और जीवनमुक्ति यह दो सौगात मैं कल्प2 जाता हूॅ। परंतु तुम भूल जाते हो। ड्रामा में भूलना ही है। सब भूल जाये तब तो मैं आउं। तोकृतुम ब्राह्मण बने हो। तुमको निश्चय है हमने 84 जन्म बरोबर लिए हैं। जो पूरा ज्ञान उठावेंगे वो नई दुनियॉ में नहीं आवेंगे। त्रेता वा त्रेता के अंत में आयेंगे। सारा मदार है पुरुषार्थ पर। सतयुग में सुख था तो सभी शांतिधाम में थे। इन लक्ष्मी–नारायण का राज्य था। अच्छा आगे जन्म में यह कौन थे किसको पता नहीं है। आगे जन्म में यह बेचैन थे। ब्राह्मण थे। ब्राह्मण से पहले शूद्र थे। वर्णों पर तुम अच्छी रीत समझा सकते हो। देवता वर्ण क्षत्रिय वर्ण.....वर्णों में भी जन्म दिखाये जाते हैं। अब तुम समझते हो हम 21 जन्मों लिए चैन पावेंगे। बाबा हमको वो रास्ता बता रहे हैं। हम अभी पतित हैं इसलिए बेचैन है। दुःखी हैं। जहॉ चैन हो उसको सुख–शांति कहेंगे। तो अब तुम बच्चों की बुद्धि में आदि मध्य अंत का ज्ञान आया हुआ है। समझते हो बरोबर सतयुग में भारत कितना सुखी था। चैन में था। दुःख अथवा बेचैनी का नाम नहीं था। अब तुम पुरुषार्थ कर रहे हो स्वर्ग में जाने लिए। अब तुम बने हो ईश्वर सम्प्रदाय के और वो हैं आसुरी सम्प्रदाय के। तुम जानते हो हम परमपिता परमात्मा के बने हैं। कोई भी देहधारी को भगवान नहीं कहा जाता है। आत्मा को भी भगवान नहीं कहा जाता। कहते हैं ना पापात्मा। आत्मायें अनेक हैं। परमात्मा एक है। सब ब्रदर्स हैं। सभी परमात्मा बाप हो ना सके। इतनी थोड़ी सी बात भी मनुष्यों की बुद्धि में नहीं आती। बिल्कुल ही पत्थर बुद्धि है। बाप आय बंदर बुद्धि को मंदिर लायक बनाते हैं। पॉच विकार हरेक में है ना। इसलिए बंदर मिसल कहा जाता है। राम ने यह सेना ली है। तुम शिव शक्ति सेना हो ना। रावण पर विजय पाते हो। .....

दुनियॉ पर है। बाबा ने समझाया है सारी दुनियॉ बड़ा बेहद का वेट है। वो छोटे2 वेट होते है। बाप समझाते हैं अब सारी धरती पर रावण राज्य है। इन बातों को मनुष्य नहीं समझते। वो तो सिर्फ शास्त्रों की बातें धारण कर कहानी सुनाते रहते हैं। कहानी को ज्ञान नहीं कहा जाता। शास्त्रों में सब हैं झूठी कहानियॉ। उनसे मनुष्य सदगति को पा नहीं सकते। ज्ञान से सदगति मिलती है। ज्ञान देने वाला एक है दूसरा ना कोई। भक्तों के भगवान ही आकर रक्षा करते हैं। इस समय सब पतित भक्त हैं। सदगति देने वाला है एक बाप। पतित–पावन सर्व के सदगति दाता उनको कहते हैं। साधु लोग ना खुद सदगति को पा सकते हैं ना किसको सदगति दे सकते हैं। साधु समझते हैं गंगा पतित–पावनी है। पुकारते फिर भी उनको हैं हे पतित–पावन। यह अभी तुम बच्चों की बुद्धि में आया है कि झूठ बोलते हैं। यह अपन को गुरू भी कह नहीं सकते। गुरू अर्थात् जो सदगति देवे। सदगति दाता तो है ही एक। इन्हों को कहा जाता है (गुरू)। शिवबाबा तो वर्सा देते हैं ना। बाप भी है, शिक्षक भी है, वकील बैरिस्टर भी है ; क्योंकि जमघटों की सजा से छुड़ाने वाला है। सतयुग में कोई भी जेल में नहीं जावेंगे। सबको जेल में जाने से छुड़ाते हैं। बच्चों की सर्वश्रेष्ठ शुभ कामनायें पूर्ण होती हैं। रावण द्वारा अशुद्ध कामनायें पूरी होती। शुद्ध कामना पूरी होने से तुम सदा सुखी बन जाते हो। अशुद्ध कामना है पतित विकारी बनना। पावन रहने वाले को ब्रह्मचारी कहा जाता है। तुमको अभी पवित्र रहना है। पवित्र बन और पवित्र दुनियॉ का मालिक बनना है। पतित से पावन एक बाप ही बनाते हैं। साधु–संत आदि तो खुद भी पतित हैं। भ्रष्टाचार से पैदा होते हैं। देवताओं के लिए ऐसे थोड़े ही कहेंगे। वहॉ विकार होते ही नहीं। वो है ही पावन दुनियॉ। लक्ष्मी नारायण सम्पूर्ण निरविकारी थे। भारत पवित्र था। यह अभी तुम समझते हो। सतयुग में प्योरिटी थी तो पीस प्रास्पर्टी थी। सब सुखी थे। रावण राज्य जब से शुरू हुआ है तब से गिरते हैं। अभी तो कोई काम के नहीं रहे हैं। एकदम कौड़ी मिसल बन पड़े हैं। अब फिर हीरे मिसल बाप द्वारा बनते हैं। भारत जब सतयुग था तो हीरे जैसा था। अब तो कौड़ी मिसल भी नहीं है। इनसाल्वेंट इररीलिजस है। अपने धर्म का ही किसको पता पड़ता है। पाप करते रहते। वहॉ तो पाप का नाम नहीं। तुम देवी देवता धर्म के नामी–ग्रामी हो। देवी देवताओं के ढेर चित्र हैं। और धर्मों में देखेंगे एक ही चित्र। क्रिश्चियन्स पास एक ही क्राइस्ट का चित्र होगा। बौद्धियों पास एक ही बौद्ध का। क्रिश्चियन्स क्राइस्ट को ही याद करते हैं। उनको नन कहा जाता है। नन्स माना और कोई भी नहीं सिवाय एक क्राइस्ट के। इसलिए कहते हैं नन बट क्राइस्ट। ब्रह्मचारी रहती है। तुम भी नन्स हो। तुम अपने गृहस्थ व्यवहार में रहते नन्स बनती हो। एक ही बाप को याद करती हो। नन बट वन। एक शिवबाबा दूसरा ना कोई। उन्हों की बुद्धि में फिर भी दो आ जाते हैं। क्राइस्ट के लिए भी समझेंगे वो गॉड का बच्चा था। परंतु उनको गॉड की नालेज नहीं है। तुमको नालेज है। सारी दुनियॉ में ऐसा कोई नहीं जिसको परमात्मा की नालेज हो। परमात्मा जानी जाननहार कहते हैं। समझते हैं वो हमारे दिल की बात को जानते हैं। बाप कहते हैं मैं नहीं जानता। हमको क्या पड़ी है जो हरेक की दिल को बैठ रीड करुंगा। हम आये ही हैं पतितों को पावन बनाने। अगर कोई पवित्र ना रहते हैं , झूठ बोलते हैं तो नुकसाल अपन को पहुॅचावेगा। गाया हुआ है देवताओं की सभा में असुर आकर बैठते थे। ....वा कोई विकार में जाय छिप कर जाय बैठते थे तो असुर हुये ना। आपे ही अपना पद भ्रष्ट कर देंगे। चंडाल का जन्म पावेंगे। हरेक को अपना पुरुषार्थ करना है। नही तो अपनी ही सत्यानाश करते हैं। बहुत ऐसे हैं जो छिप कर आय बैठते हैं। कहते हम विकार में थोड़े ही जाते। परंतु .....यह गोया अपन को ठगते हैं। अपनी सत्यानाश करते हैं। परमपिता परमात्मा.....धर्मराज है उनके आगे झूठ बोलते हैं तो खुद ही दंड के भागी बन पड़ते हैं। .....।